किताबों की दुनिया में पाया खजाना

कमला भसीन

किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना
ये साथी मेरी औ मेरा आशियाना

किताबों के संग-संग जंगल मैं घूमी
थे वाकई वो जंगल न दिखती थी भूमि
बोलती हवाओं के संग-संग मैं झूमी
तितली ने आके नजर मेरी चूमी
कोयल और तोते सुनाते थे गाना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना

किताबों ने मुझको दिखाए समन्दर
चमत्कारी जीव छिपे जिनके अंदर
मगर और घड़ियाल यहां के सिकन्दर
ढूंढ़े न मिलते समन्दर में बंदर
मछली सा तैराक मैने न जाना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना

किताबों ने महलों में मुझको पहुंचाया
वहां मेरे चलने को कालीन बिछाया
राजा और रानी को खाते दिखाया
रानी को सखियों संग गाते दिखाया
महलों के ढंगों को मैंने पहचाना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना

लैला-मजनूं के किस्से किताबों में पाए
शीरी-फरियाद के दीदार इन्हीं ने कराए
इन्हीं ने मुझे राज सबके बताए
इन्हीं ने मुझे गीत और साज सुनाए
मेरे मन में भी इनने छेड़ा तराना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना

कभी साफ-सीधी कभी ये पहेली
इन्हीं संग सोई इन्हीं संग खेली
किताबें बनी मेरी संगी-सहेली
इन्हीं की बदौलत कभी न अकेली
ये हों पास मेरे तो भूलूं जमाना
किताबों कि दुनिया में पाया खज़ाना